IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

बीसवीं सदी के उपन्यासों में किसान जीवन का अध्ययन

शिवानी अहिरवार पी-एच.डी. शोधार्थी (हिन्दी विभाग)

हिंदी अध्ययन शाला एवं शोध केंद्र महाराज छत्रसाल बुंदेलखंड विश्वविद्यालय छतरपुर

डॉ के. सी. जैन शोध निर्देशक प्राध्यापक (हिंदी विभाग)

हिंदी अध्ययन शाला एवं शोध केंद्र शासकीय पी.जी. कॉलेज टीकमगढ़

प्रस्तावना :- बीसवीं सदी के उपन्यासों में किसानो की आर्थिक और सामाजिक स्थिति का यथार्थ चित्रण किया गया है। उपन्यासकारों ने अपने अनुभवों और आसपास के वातावरण का अध्ययन कर उपन्यासों में वास्तविकता का उदाहरण प्रस्तुत किया है। भारत एक कृषि प्रधान देश रहा है। जिसकी लगभग 70% आबादी गांव में निवासरत है। भारत में किसान मुख्यतः तीन प्रकार के हैं लघु , सीमांत और वृहद। जिनमें से लघु और सीमांत किसानों की स्थिति दयनीय है। महात्मा गांधी ने ठीक ही कहा है, "भारत गांव का देश है और कृषि भारत की आत्मा है।" किसानों का जीवन प्रारंभ से अंत तक संघर्षों से घिरा हुआ रहता है। परंतु बीसवीं सदी के उपन्यासों में किसानों की स्थिति को सुधारने का पुरजोर स्वर प्रखर हुआ और उनकी समस्याओं पर विस्तृत चर्चा प्रस्तुत की गई है।

मूल शब्द :- उपन्यास , किसान , यथार्थ , ग्रामीण

विषय वस्तु :- उपन्यास गद्य लेखन की विधा है यह जीवन का अत्यंत विस्तृत और विशद दर्पण है साहित्य की अन्य विधाओं की तुलना में इसका चित्र व्यापक होता है जिस कारण किसानों के जीवन को उपन्यास के माध्यम से वास्तविक रूप में चित्रित किया गया है जिसमें से प्रमुख उपन्यासों का इस शोध पत्र में अध्ययन प्रस्तुत है।

गोदान होरी नामक किसान के जीवन पर आधारित उपन्यास है जिसमें विभिन्न पात्रों (धनिया , गोबर , गोविंदी , भोला) की सहायता से उपन्यास को वास्तविकता प्रदान की गई है। इसके अंतर्गत किसान जीवन से संबंधित समस्याएं जैसे ऋण के दुष्चक्र का समाप्त ना होना , किसानों पर लगान का दबाव और अन्याय पूर्ण सामाजिक प्रथाएं आदि पर प्रकाश डाला गया है। होरी मात्र एक गाय पालना चाहता है और जीवन भर इसके लिए सश्रम संघर्ष

भी करता है परंतु अंत में उसे मृत्यु ही मिलती है जो यह इंगित करता है कि तत्कालीन समय में एक गरीब किसान की क्या हालत हुआ करती थी। प्रेमचंद के शब्दों में "हमें कोई दोनों जून खाने को दे तो हम आठों पहर भगवान का जाप ही करते रहे"। प्रेमचंद बूढ़े किसानों की मनोस्थिति को समझते हुए कहते हैं कि बूढ़ों के लिए अतीत के सुखों और वर्तमान के दुखों और भविष्य के सरवन नाथ से ज्यादा मनोरंजक और कोई प्रसंग नहीं होता।

कर्मभूमि' नामक उपन्यास में किसान आंदोलन जमीन की समस्या लगान कम करने और खेतिहर मजदूरों की समस्या पर यथार्थता से वर्णन प्राप्त होता है। अमरकांत इस उपन्यास का प्रमुख पात्र है जो किसान आंदोलन का समर्थन करते हुए जेल की सजा काटता है और अमरकांत की पत्नी भी अछूतों के मंदिर प्रवेश को लेकर हुए आंदोलन में हिस्सा लेने के कारण जेल चली जाती है। पात्रों के जीवन की विविध घटनाओं द्वारा प्रेमचंद ने अपने उद्देश्यों को मूर्त रूप प्रदान किया।

रांगेय राघव द्वारा रचित उपन्यास 'विषाद-मठ' में बंगाल की दुर्भिक्ष को चित्रित किया गया है। जमीन ,घर लगान में विच गए और दूसरी तरफ महाजन सूद पर पैसा देकर गरीब इंसानों की आर्थिक स्थिति को और अधिक कमजोर कर रहे थे। उपन्यास का नाम विषाद-मठ ही क्यों रखा? रांगेय राघव के शब्दों में" जब मुगलों का राज समाप्त होने को आया था तब बंगाल की हरी भरी धरती पर आकर पड़ा था उस पर बंकिम चंद्र चटर्जी ने आनंदमठ लिखा था जब अंग्रेजों का राज्य समाप्त होने पर आया तब फिर बंगाल की हरी भरी धरती पर अकाल पड़ा उसका वर्णन करते हुए मैंने इसीलिए इस पुस्तक को विषाद मठ नाम दिया।"

स्वतंत्रता के पश्चात रांगेय राघव , फणीश्वर नाथ रेणु , जगदीश चंद्र , लक्ष्मी नारायण लाल , रामदरश मिश्र प्रमुख उपन्यासकार हैं। जिन्होंने किसानों की वास्तविक स्थिति को प्रस्तुत करने का प्रयास किया। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात किसान जीवन में बहुत से परिवर्तन हुए। जमींदार प्रथा को समाप्त कर दिया गया परंतु जमींदारो द्वारा कई दशकों से एकत्रित धन संपत्ति और सामाजिक बाहुबलता का प्रयोग किसानों की स्थिति को कमजोर बना रही थी।

जगदीश चंद द्वारा लिखित उपन्यास 'धरती धन ना अपना' पंजाब की दोआब क्षेत्र के दलितों का उपन्यास है जिसमें काली प्रमुख पात्र है जो चमादड़ी नामक दलित जाति से संबंध रखता है और इस कारण सामाजिक तिरस्कार और विकट परिस्थितियों का सामना करता है। यहां दलित लोग जमींदारों के खेतों में खेतिहर मजदूर की भांति कार्य करते हैं जिससे उनकी रोजी रोटी चलती है अर्थात दलित किसान आर्थिक रूप से इन पर निर्भर है। उपन्यास में एक ऐसी घटना का वर्णन है जिसमें बाढ़ आने पर दलितों के कुए का पानी पीने योग्य नहीं रहता परंतु तब भी जमींदारों द्वारा उनकी कोई सहायता नहीं की जाती है।

फणीश्वर नाथ रेणु द्वारा लिखित उपन्यास 'मैला आंचल' आंचलिक उपन्यास का महाकाव्य है। इसका केंद्र पूर्णिया जिले का मेरीगंज है जहां ग्रामीण किसान के सामाजिक जीवन के प्रत्येक पक्ष को उकेरा गया है। जहां किसान या तो खेत में मजदूर है या बटाईदारी पर खेती करते हैं, उन्हें भरपेट भोजन और जीवन यापन की

सामान्य सुविधाएं भी नहीं मिलती है। जमींदारों, तहसीलदार द्वारा इनका शोषण किया जाता है। किसानों का अशिक्षित, अंधविश्वासी होना कितना हानिकारक हो सकता है इस उपन्यास में साफ झलकता है।

लक्ष्मीनारायण लाल द्वारा लिखित उपन्यास 'धरती की आंखें' जिसमें जमींदारों और किसान का आपसी संघर्ष चित्रित है। रामदरश मिश्र के उपन्यास 'पानी के प्राचीर' में प्रमुख रूप से बाढ़ और ऋण समस्या तथा सूखा को दिखाया गया है गुलरेज खां शानी ने एक साल से अधिक समय अबूझ माड़ के बीहड़ जंगलों में आदिवासियों के बीच बिताया और उनके जीवन को नजदीक से देखा जिसका परिणाम है साल वनो के द्वीप जनजाति किसान जीवन पर आधारित उपन्यास है जो मढ़िया जनजाति है किसानों और उनकी समस्याओं पर प्रकाश डालता है।

'डूब' तीन तरफ पहाड़ों से और एक तरफ बेतवा नदी से घिरे लड़ैइ गांव का उपन्यास है जहां सरकार बांध बनाना चाहती है। माते इसका प्रमुख पात्र है जो अशिक्षित है परंतु अनुभव संपन्न और राजनीतिक दांवपेच को भलीभांति समझता है। जब किसानों को मुआवजे की आधी रकम भी नहीं मिलती तब इसी बात से क्षुब्ध होकर माते कहता है "और जो दाम दिए उसमें से भी आधे झपट लिए देने वाली हथेली नीचे रख भाई और मांगने वाले तेरे ऊपर या उल्टा चलन चलो आया इसलिए तो ना देने वाले के हाथ में कुछ रह पाया ना पाने वाले तक कुछ पहुंचा सब का सब जा गिरा धरती पर।"(डूब पृष्ठ 242) यह उपन्यास बांध बनने के कारण किसानों और उनके ग्रामीण जीवन पर पड़ने वाले दुष्परिणामों पर प्रकाश डालता है।

महिला उपन्यासकार कृष्णा सोबती ने अपने उपन्यास 'जिंदगीनामा' में बीसवीं सदी के आरंभिक 15 वर्षों के मध्य एकीकृत पंजाब के किसानों के जीवन का यथार्थ चित्रण किया है। किसानों के प्रति संवेदनाएं रखते हुए उनकी समस्याओं को उकेरा जैसे प्रत्येक वर्ष मेहनत करने के पश्चात भी भरपेट अनाज ना मिलना, सूद के कुचक्र में फंस कर जमीन साहूकारों के हाथों में चली जाना। लेखिका ने सामाजिक संघर्ष के चलते तत्कालीन देश में घटी घटनाओं को भी अपने पात्रों के माध्यम से पाठकों के समक्ष वास्तविक रूप में प्रस्तुत किया है।

<u>शोध का उद्देश्य</u> :-

1. उपन्यासों के माध्यम से किसानों के जीवन पर वास्तविक प्रकाश डालना।
2. स्वतंत्रता के पूर्व किसानों की समस्याओं जैसे जमीदारी प्रथा लगान प्रथा पर विस्तृत चर्चा।
3. स्वतंत्रता के पश्चात बदलते राजनीतिक आर्थिक सामाजिक परिवेश का किसान जीवन पर प्रभाव चित्रित करना।
4. प्राकृतिक प्रकोपो का किसानों और ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर दुष्प्रभाव और निपटने के सुझाव प्रस्तुत करना।
5. किसानों के जीवन पर विगत 100 वर्षों में हुए परिवर्तन का अध्ययन करना।

6. जनजातीय किसानों के जीवन की समस्याओं पर प्रकाश तथा इनमें सुधार हेतु सुझाव प्रस्तुत करना।

7. खेतिहर मजदूर किसानों के जीवन के प्रत्येक पक्ष पर यथार्थ चित्रण करना।

8. भारत जैसे कृषि प्रधान देश में किसानों की महत्ता पर प्रकाश डालना।

शोध की प्रासंगिकता :- भारत की ग्रामीण जनसंख्या 84.7 करोड़ (जनगणना 2011) है जो प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप में कृषि पर निर्भर है। कृषि , किसानों की परिस्थिति में सुधार तथा भारत की सामाजिक और आर्थिक स्थिति को सुधारने में प्रमुख साधन है उपन्यासों में वर्णित किसानी जीवन के पक्षों से तत्कालीन समस्याओं और विषमताओं का चित्रण संभव हुआ है जो वर्तमान काल में भी व्याप्त है जिस पर शोध और जन जागरूकता आवश्यक है।

निष्कर्ष :- किसान भारतीय अर्थव्यवस्था का आधार है जो खाद्यान्य फसलों से लेकर वाणिज्यिक फसलें तक उपजाता है परंतु उसके जीवन में उतनी ही कठिनाइयों और संघर्ष भी रहते हैं जिसे दूर करने के प्रयास किए जा रहे हैं। भारत कृषि प्रधान देश है। यहां किसानों की महत्ता प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप में प्रदर्शित होती है। बीसवीं सदी के उपन्यासों में कृषि व्यवस्था और किसानों के जीवन पर विस्तृत और यथार्थ चर्चा की गई है जिनके अध्ययन से प्रमुख समस्याओं पर प्रकाश डाला जा सकता है बाढ़ , सूखा , अकाल के समय किसानों की दयनीय स्थिति का यथार्थ चित्रण उपन्यासों में प्रदर्शित होता है। इनका सूक्ष्म अवलोकन कर किसान के जीवन से जुड़े प्रत्येक पक्ष पर सुधारों के सुझाव प्रस्तुत किए जा सकते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. रेणु,नाथ,फणीश्वर,परती परिकथा,राजकमल प्रकाशन

3. लाल,लक्ष्मीनारायण,धरती की आंखें,सेंट्रल बुक डिपो,प्रयागराज

4. प्रेमचंद , कर्मभूमि , भूमिका प्रकाशन , राजस्थान

5. प्रेमचंद , गोदान , हिंदी ग्रंथ रत्नाकार कार्यालय , मुंबई

6. रांगेय , राघव , विषादमठ , किताबघर प्रकाशन , नई दिल्ली

7. मिश्र , रामदरश , पानी के प्राचीर , वाणी प्रकाशन , नई दिल्ली

8. चंद , जगदीश , धरती धन न अपना , राजकमल प्रकाशन

9. जैन , वीरेंद्र , डूब , वाणी प्रकाशन , नई दिल्ली